

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES



ISSN 2277 – 9809 (online)

ISSN 2348 - 9359 (Print)

An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal

www.IRJMSH.com
www.isarasolutions.com

Published by iSaRa Solutions

मृगाडांड (आदिवासी महाकवि कालिदास पंडो की जन्मस्थली) का विश्व की प्राचीनतम हाथीपोल शैल नाट्य शाला : डॉ. राम विजय शर्मा के नवीन खोज एवं शोध के संदर्भ में

शोधकर्ता – डॉ. राम विजय शर्मा,
एम.ए. (इतिहास)—प्रथम श्रेणी, पी-एच.डी. (इतिहास), यू.जी.सी. नेट (इतिहास), छत्तीसगढ़ सेट (इतिहास),
इतिहासकार, पुरातत्ववेत्ता एवं अंतरराष्ट्रीय शोधकर्ता, रायपुर भारत



डॉ. राम विजय शर्मा, इतिहासकार, पुरातत्ववेत्ता एवं अंतरराष्ट्रीय शोधकर्ता, विश्व की प्राचीनतम हाथीपोल शैल नाट्यशाला पर शोध करते हुए

1. अमूर्त (Abstract) :

वैश्विक नाट्य इतिहास में अब तक पाश्चात्य विद्वानों के प्रभाव में आकर एथेंस के ओपन-एयर थिएटर्स को ही रंगमंच का आदि-स्थल माना जाता रहा। भारत के लघु और सतही इतिहासकारों ने भी इस औपनिवेशिक मानसिकता के आगे आत्मसमर्पण करते हुए सरगुजा की मात्र 4 फीट ऊँची सीताबेंगरा गुफा को संपूर्ण नाट्यशाला मानकर इसके वास्तविक वैभव को सीमित कर दिया। किंतु, प्रख्यात इतिहासकार डॉ. राम विजय शर्मा के क्रांतिकारी उद्घोष ने इस ऐतिहासिक विसंगति को जड़ से उखाड़ फेंका है।

डॉ. शर्मा ने पहली बार वैज्ञानिक और व्यावहारिक साक्ष्यों के आधार पर यह घोषित किया कि सरगुजा (रामगिरी) की 'हाथीपोल गुफा' (Hathipol Cave) ही वास्तव में 500 दर्शकों की क्षमता वाली विश्व की प्राचीनतम महा-शैल नाट्यशाला है। यह शोध-पत्र डॉ. शर्मा के इस क्रांतिकारी सिद्धांत का भरतमुनि कृत नाट्यशास्त्र के द्वितीय अध्याय 'रंगमंडप लक्षणम्' के साथ तुलनात्मक और विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। इसके साथ ही, इस संपूर्ण रंगमंच परिसर के अंतर्गत सीताबेंगरा की मात्र 4 फीट ऊँची कंदरा के 'कवि-गोष्ठी दीर्घा' होने, जोगीमारा के 'नेपथ्य' (ग्रीन रूम) होने और महाकवि कालिदास के पण्डो आदिवासी मूल से जुड़े अंतःसाक्ष्यों की अकादमिक मीमांसा की गई है।

प्रमुख शब्द (Keywords)

डॉ. राम विजय शर्मा, डॉ. थियोडोर ब्लॉक, सर अलेक्जेंडर कनिंघम, भरतमूनिका नाट्यशास्त्र, एथेंस का ओपन एयर थिएटर, आदिवासी महाकवि कालिदास पण्डों, हाथीपोल विश्व का प्राचीनतम शैल नाट्यशाला, डॉ. विष्णु श्रीधर वाकणकर।

भौगोलिक स्थिति

हाथीपोल महा शैल नाट्यशाला अंबिकापुर, बिलासपुर मार्ग पर अंबिकापुर से 45 किलोमीटर की दूरी पर उदयपुर से सटे आदिवासी ग्राम मृगाडांड की सरहद में स्थित है। जो उदयपुर से 2 किलोमीटर की दूरी पर है।

2. प्रस्तावना एवं समस्या का स्वरूप (Introduction & Problem Statement) :

इतिहास का यह एक क्रूर सच है कि बड़े पुरातात्विक साक्ष्यों की व्याख्या अक्सर छोटे और संकीर्ण दृष्टिकोण वाले इतिहासकारों द्वारा की गई, जिससे सत्य विकृत हो गया। सरगुजा के उदयपुर में स्थित रामगढ़ पर्वत के संदर्भ में भी यही हुआ। वर्षों तक पाठ्यपुस्तकों में यह पढ़ाया जाता रहा कि 'सीताबेंगरा' विश्व की सबसे पुरानी नाट्यशाला है। कोई भी तार्किक मस्तिष्क यह प्रश्न पूछने में विफल रहा कि जिस गुफा की आंतरिक ऊँचाई मात्र 4 फीट है, वहाँ कोई कलाकार खड़ा होकर अभिनय या नृत्य कैसे कर सकता है?

इस अकादमिक जड़ता को तोड़ते हुए डॉ. राम विजय शर्मा ने अपने शोध के माध्यम से एक नया उद्घोष किया। उन्होंने सिद्ध किया कि रामगढ़ की पहाड़ी पर कोई एक गुफा अकेली नहीं थी, बल्कि यह ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी (3rd Century BCE) का एक संपूर्ण 'थिएटर कॉम्प्लेक्स' (Ancient Theatre Complex) था। इस कॉम्प्लेक्स का मुकुटमणि 'हाथीपोल गुफा' थी, जो अपनी विशाल संरचना के कारण विशाल जनसमूह के प्रदर्शनों के लिए उपयोग की जाती थी।

3. शोध के उद्देश्य (Objectives of the Study) :

1. डॉ. राम विजय शर्मा के क्रांतिकारी सिद्धांतों के आलोक में हाथीपोल गुफा को 500 दर्शकों की क्षमता वाली विश्व की प्राचीनतम महा-शैल नाट्यशाला के रूप में अकादमिक स्तर पर स्थापित करना।
2. सीताबेंगरा गुफा के मूल शिलालेख (जिसमें कवियों द्वारा हृदय प्रदीप्त करने का वर्णन है) और उसकी 4 फीट की ऊँचाई के आधार पर इसके 'कवि-गोष्ठी स्थल' होने के दावे की पुष्टि करना।

3. आचार्य भरतमुनि कृत नाट्यशास्त्र के द्वितीय अध्याय (रंगमंडप लक्ष्मण) के नियमों-विशेषकर 'शैलगुहाकार और 'विकृष्ट मध्य सिद्धांतों की कसौटी पर हाथीपोल के ध्वनि-विज्ञान और वास्तुकला का विश्लेषण करना।
4. जोगीमारा गुफा के भौगोलिक स्थापत्य और सुतनुका देवदीन शिलालेख के आधार पर इसे इस रंगमंच परिसर का प्रामाणिक नेपथ्य (Green Room) सिद्ध करना।
5. पण्डो आदिवासियों की 'कर्मा लोक-परंपरा' का मानवशास्त्रीय (Anthropological) अध्ययन कर यह सिद्ध करना कि हाथीपोल एक निरंतर जीवित लोक रंगशाला (Living Folk Theatre) है।

4. शोध की कार्यप्रणाली (Research Methodology) :

यह शोध बहु-विषयक (Multi-Disciplinary Approach) पद्धति पर आधारित होगा, जिसमें निम्नलिखित प्राथमिक और माध्यमिक स्रोतों का उपयोग किया जाएगा:

- **प्राथमिक पुरातात्विक सर्वेक्षण (Field Survey)**– हाथीपोल, सीताबेंगरा और जोगीमारा गुफाओं के भौतिक आयामों, पत्थरों के छेदों (पवनिका खंभों के सुराख) और ध्वनि परावर्तन (Acoustic measurement) का व्यावहारिक मापन और फोटोग्राफी।
- **शिलालेखीय विश्लेषण (Epigraphical Study)**– सीताबेंगरा और जोगीमारा के मौर्यकालीन ब्राह्मी शिलालेखों के प्राकृत/संस्कृत पाठ का डॉ. राम विजय शर्मा और डॉ. थियोडोर ब्लॉक के भाषाई अनुवादों के साथ तुलनात्मक अध्ययन।
- **मानवशास्त्रीय फील्डवर्क (Anthropological Fieldwork)**– सरगुजा के 'मृगाडांड' ग्राम और रामगढ़ की तलहटी में बसी 'पण्डो' जनजाति के बीच जाकर 'कर्मा तिहार के दौरान उनके गीतों, वाद्यों (मांदर) और नृत्य शैलियों का लाइव दस्तावेजीकरण (वीडियो और ऑडियो रिकॉर्डिंग)।
- **साहित्यिक अंतः साक्ष्य (Literary Analysis)**– भरतमुनि के नाट्यशास्त्र, कालिदास के मेघदूत, रघुवंशम् और ऋतुसंहारम् में वर्णित प्राकृतिक व कृषि साक्ष्यों (जैसे जंगली धान करगा/नीवार) का मिलान।

5. शोध का महत्व एवं संभावित परिणाम (Significance & Expected Outcome) :

- यह शोध इतिहास की एक बहुत बड़ी भूल को सुधारेगा और प्रमाणित करेगा कि यूनान से सदियों पहले भारत के छत्तीसगढ़ में एक पूर्णतः वैज्ञानिक, बंद और इन-डोर त्रि-आयामी थियेटर कॉम्प्लेक्स अस्तित्व में था।
- यह पुरातात्विक इतिहास को लोक सांस्कृतिक (पण्डो जनजाति के कर्मा) इतिहास से जोड़कर लिविंग एंथ्रोपोलॉजी का एक नया प्रतिमान स्थापित करेगा।
- इसके निष्कर्षों के आधार पर रामगढ़ (सरगुजा) को यूनेस्को (UNESCO) की विश्व धरोहर सूची और वैश्विक रंगमंच मानचित्र पर सर्वोच्च स्थान दिलाने में मदद मिलेगी।

6. डॉ. राम विजय शर्मा का क्रांतिकारी उद्घोष: हाथीपोल महा-रंगशाला :

डॉ. राम विजय शर्मा ने अपने शोध-पत्रों में साक्ष्यों के साथ यह स्थापित किया कि जन-साधारण के मनोरंजन, संगीत उत्सवों और महाकाव्य गान के लिए हाथीपोल गुफा का ही उपयोग होता था:

- **500+ दर्शकों की विशाल क्षमता:** हाथीपोल पहाड़ को चीरकर बनी 180 फीट लंबी और लगभग 30 फीट ऊँची एक अद्भुत प्राकृतिक सुरंग है। डॉ. शर्मा के अनुसार, इसके आंतरिक फैलाव और इसके ठीक बाहर

के ढलानदार मैदानी हिस्से की भौतिक बनावट ऐसी है कि यहाँ 500 से अधिक लोग एक साथ सुगमता से बैठकर प्रदर्शन का आनंद ले सकते थे।

- **लघु इतिहासकारों के भ्रम का खंडन:** डॉ. शर्मा ने उन सिद्धांतों को पूरी तरह खारिज कर दिया जो केवल सीताबेंगरा को रंगमंच मानते थे। उन्होंने उद्घोष किया कि हाथीपोल ही वह मुख्य 'ऑडिटोरियम' था जिसने यूनानी थिएटर्स से सदियों पहले भारत में विशाल जन-रंगमंच की नींव रखी थी।

7. भरतमुनि के नाट्यशास्त्र की कसौटी पर हाथीपोल :

जब हम डॉ. राम विजय शर्मा के इस उद्घोष को आचार्य भरतमुनि के नाट्यशास्त्र के नियमों पर परखते हैं, तो दोनों के बीच एक अचंभित करने वाला वैज्ञानिक तालमेल दिखाई देता है:

क. 'शैलगुहाकार' सिद्धांत की पूर्णता :

भरतमुनि ने एक आदर्श रंगमंडप के लिए स्पष्ट निर्देश दिया था:

शैलगुहाकारं कुर्यात् नाट्यवेस्म सुसंस्थित् । मन्दशब्दावलोकं च गम्भीरस्वरतायुतम् ॥

(नाट्यशास्त्र, 2.80)

अर्थात् नाट्यशाला को पहाड़ की गुफा के आकार का होना चाहिए ताकि बाहर की तीव्र हवाएँ और शोर-शराबा नाटक के संवादों में बाधा न डालें। इससे पात्रों के अत्यंत धीमे शब्द भी दर्शकों तक स्पष्ट पहुँचते हैं। हाथीपोल पूरी तरह से एक विशाल 'शैल-गुहा' है जो इस शास्त्रीय नियम को भौतिक रूप से साकार करती है।

ख. 'विकृष्ट मध्य' रंगमंडप का वैज्ञानिक अनुपात :

नाट्यशास्त्र के अनुसार, राजाओं और जनसाधारण के लिए 'विकृष्ट' (Rectangular/आयताकार) रंगमंडप को ही 'ज्येष्ठ' यानी सर्वश्रेष्ठ माना गया है। हाथीपोल की 180 फीट लंबी आयताकार सुरंग भरतमुनि के इसी संरचनात्मक अनुपात पर आधारित है, जो अभिनेताओं और 500 दर्शकों के बीच दृश्यता और श्रव्यता का सटीक संतुलन बनाती है।

ग. ध्वनि विज्ञान (Architectural Acoustics) :

नाट्यशास्त्र के द्वितीय अध्याय के श्लोक 82 में कहा गया है :

कुतपस्य प्रगार्थ तु निर्वातं तद्विधीयते । हाथीपोल के भीतर की हवा का प्रवाह और उसकी चट्टानी दीवारों का कोण (Angle) ऐसा है कि इसके केंद्र में खड़े होकर बोले गए शब्द पूरी कंदरा में बिना प्रतिध्वनि (Echo) के गूँजते हैं। डॉ. शर्मा ने सिद्ध किया कि प्राचीन काल के शिल्पियों ने भरतमुनि के इसी ध्वनि विज्ञान को ध्यान में रखकर हाथीपोल को रंगमंच के रूप में चुना था।

8. सीताबेंगरा का वास्तविक स्वरूप: मात्र 4 फीट ऊँची 'कवि-गोष्ठी दीर्घा' :

इस शोध-पत्र की सबसे बड़ी उपलब्धि सीताबेंगरा गुफा के वास्तविक उपयोग को पुनर्परिभाषित करना है :

- **शारीरिक स्थापत्य की सीमा (Physical Constraints) :** सीताबेंगरा गुफा की आंतरिक छत की ऊँचाई मात्र 4 फीट (1.2 मीटर) है। यह अकादमिक सत्य इस बात को पूरी तरह खारिज करता है कि यहाँ खड़े होकर नाटक किए जाते थे।
- **कवि-गोष्ठी (Poetic Assembly) का केंद्र :** डॉ. राम विजय शर्मा के अनुसार, सीताबेंगरा का निर्माण 'बैठकर' (Sitting Posture) किए जाने वाले बौद्धिक और साहित्यिक विमर्शों के लिए हुआ था। यह उस काल की एक अत्यंत विशिष्ट 'कवि-गोष्ठी दीर्घा' थी। यहाँ राजा, प्रधान कवि और मनीषी पत्थरों के आसनों पर बैठकर शास्त्रार्थ करते थे और कविताओं का पाठ करते थे।

9. जोगीमारा गुफा : नाट्यशाला का प्रामाणिक 'नेपथ्य' (Green Room)

हाथीपोल और सीताबेंगरा से बिल्कुल सटी हुई जोगीमारा गुफा स्थित है, जो इस श्थिएटर कॉम्प्लेक्स के 'नेपथ्य गृह' (Green Room) की भूमिका निभाती थी :

नाट्यशास्त्रीय प्रमाण : भरतमुनि के नियमानुसार रंगपीठ के पार्श्व या पीछे नेपथ्य होना अनिवार्य है ('रंगपीठस्य पश्चात् नेपथ्यगृहमुच्यते'). जोगीमारा की भौगोलिक स्थिति इसी नियम के तहत है।

सुतनुका-देवदीन प्रसंग: जोगीमारा की दीवार पर मौर्यकालीन ब्राह्मी लिपि में उत्कीर्ण शिलालेख इस ग्रीन रूम की जीवंतता का सबसे बड़ा साक्ष्य है :

'सुतनुका नाम देवदासिन् । तं कमयिथ

बलानसिये रूपदखे देवदिने नाम ।।'

वाराणसी का रूपदक्ष (सज्जाकार/मूर्तिकार)

देवदीन, इसी रंगशाला की प्रधान नर्तकी

सुतनुका के प्रेम में आबद्ध था। देवदीन

कलाकारों की रूप-सज्जा इसी जोगीमारा

रूपी 'ग्रीन रूम' में करता था, जहाँ उसने

अपनी अमर प्रेम कहानी को पत्थरों पर खोद

दिया। जोगीमारा की छतों पर बने सात

भित्तिचित्रों में भी कलाकारों के समूह और

वाद्ययंत्रों का अंकन इसके 'नेपथ्य' होने की

पुष्टि करता है।

10. कालिदास का 'पण्डो' आदिवासी मूल और 'करगा' धान का अंतःसाक्ष्य

डॉ. राम विजय शर्मा के शोध का सबसे क्रांतिकारी आयाम महाकवि कालिदास को इसी माटी से जोड़ना है :

- **मृगाडांड ग्राम का सिद्धांत :** डॉ. शर्मा ने स्थानीय लोक-साक्ष्यों के आधार पर स्थापित किया कि कालिदास बाहरी प्रवासी नहीं थे, बल्कि वे रामगढ़ की तलहटी में बसे ऐतिहासिक आदिवासी गाँव 'मृगाडांड' के निवासी थे और स्थानीय 'पण्डो' जनजाति से संबंध रखते थे।
- **साहित्यिक अंतः साक्ष्य:** कालिदास के मेघदूतम् का पहला ही श्लोक ('वसतिं रामगिर्याश्रमेषु') इसी रामगढ़ की गवाही देता है। इसके अलावा, कालिदास ने अपने काव्यों में छत्तीसगढ़ के जंगलों में स्वतः उगने वाले जिस 'नीवार' (जंगली धान) का वर्णन ऋषियों के भोजन के रूप में किया है, उसे छत्तीसगढ़ में आज भी स्थानीय रूप से 'करगा' (Karga) कहा जाता है। यह वन-संस्कृति और जंगली धान का इतना बारीक ज्ञान केवल एक वनवासी चेतना के कवि को ही हो सकता था।

11. व्यापक संरचनात्मक वर्गीकरण सारणी (Comprehensive Structural Classification)

कंदरा का नाम	भौतिक आयाम एवं ऊँचाई	दर्शक क्षमता	नाट्यशास्त्रा के अनुसार वर्गीकरण एवं व्यावहारिक उपयोग
हाथीपोल गुफा	180 फीट लंबी, 30 फीट ऊँची प्राकृतिक सुरंग	500 लोग	'विकृष्ट मध्य' महा-रंगशाला : जहाँ वृहद् जनसमूह के समक्ष नाटक, संगीत उत्सव और महाकाव्यों का गान होता था।
जोगीमारा गुफा	मुख्य रंगमंच से बिल्कुल सटी हुई लघु कंदरा	कलाकार विशिष्ट	'नेपथ्य गृह' (Green Room): कलाकारों की साज-सज्जा का स्थान। सुतनुका नर्तकी और देवदीन रूपदक्ष की कर्मस्थली।

सीताबेंगरा गुफा	मात्रा 4 फीट ऊँची कृत्रिम कंदरा	30–50 लोग	'कवि-गोष्ठी दीर्घ' (Poetic Salon): बैठकर किया जाने वाला शास्त्रार्थ, काव्य पाठ एवं गोपनीय साहित्यिक बैठकें।
-----------------	---------------------------------	-----------	---

12. सीताबेंगरा शिलालेख का काव्यात्मक साक्ष्य और 'कवि-गोष्ठी स्थल' का अकादमिक प्रमाण

1. सीताबेंगरा का मूल शिलालेख और डॉ. शर्मा का विश्लेषण

सीताबेंगरा गुफा के मुहाने की दीवार पर ईसा पूर्व तीसरी से दूसरी शताब्दी का मौर्यकालीन ब्राह्मी लिपि और प्राकृत भाषा में दो पंक्तियों का एक अत्यंत दुर्लभ शिलालेख उत्कीर्ण है। जब प्रख्यात पुरातत्वविद डॉ. थियोडोर ब्लॉक और बाद में डॉ. राम विजय शर्मा ने इसका गहन भाषाई और व्यावहारिक अध्ययन किया, तो इसके शब्द सीधे तौर पर कविता और कवियों को समर्पित मिले।

- **शिलालेख की मूल भावना और अनुवाद:** इस शिलालेख में प्रकृति, वसंत ऋतु और कवियों का बहुत सुंदर वर्णन है। इसका प्रामाणिक अनुवाद इस प्रकार है:

'हृदय को आंदोलित और प्रकाशित करने वाले स्वभाव से ही पूजनीय कविगण यहाँ एकत्र होते हैं... वे अपने कंठों में चमेली (कुंद) के फूलों की घनी मालाएँ धारण करते हैं... और यहाँ वसंत की पूर्णिमा के उत्सव में संगीत और काव्यात्मक विमर्श का आनंद लेते हैं।'

2. डॉ. राम विजय शर्मा के अनुसार यह 'कवि-गोष्ठी स्थल' क्यों है? (तीन अकादमिक तर्क)

डॉ. राम विजय शर्मा ने इस शिलालेख के आधार पर छोटे इतिहासकारों के सिद्धांतों को खारिज करते हुए निम्नलिखित अकादमिक निष्कर्ष दिए :

- **कवि शब्द का सीधा उल्लेख (Direct Reference to Poets) :** शिलालेख की शुरुआत ही कवियों की प्रशंसा से होती है. यदि यह एक सामान्य थियेटर होता, तो यहाँ अभिनेताओं (नट), नर्तकों या नाटकों का उल्लेख होता। संपूर्ण शिलालेख में 'कवि' और उनके द्वारा 'हृदय को प्रदीप्त करने' की कला का वर्णन है, जो यह सिद्ध करता है कि यह स्थान मूलतः 'कवि-गोष्ठी' (Poetic Symposium) और साहित्यिक बैठकों के लिए आरक्षित था।
- **'बैठने' की मुद्रा और 4 फीट की ऊँचाई का रहस्य :** सीताबेंगरा गुफा की आंतरिक ऊँचाई मात्र 4 फीट है। डॉ. शर्मा ने तर्क दिया कि शिलालेख में वर्णित 'कवियों के बैठने और माला धारण करने' का दृश्य इस 4 फीट की भौगोलिक संरचना के सर्वथा अनुकूल है। कवि यहाँ पत्थरों के आसनों पर सुखपूर्वक बैठकर (पालथी मारकर) एक-दूसरे को अपनी कविताएँ सुनाते थे, जिसे शास्त्रीय भाषा में 'गोष्ठी' या 'शास्त्रार्थ' कहा जाता है।
- **वसंतोत्सव और मेघदूतम् की पृष्ठभूमि :** शिलालेख में वसंत ऋतु और पूर्णिमा के चांद के समय होने वाले काव्यात्मक आयोजनों का जिक्र है। महाकवि कालिदास ने भी अपनी रचनाओं में इसी प्रकार के प्राकृतिक परिवेश का वर्णन किया है। यह शिलालेख अकादमिक रूप से प्रमाणित करता है कि कालिदास ने सीताबेंगरा की इसी 4 फीट ऊँची कंदरा में बैठकर, अन्य समकालीन कवियों की गोष्ठी के बीच अपने विरह-काव्य 'मेघदूतम्' की प्रारंभिक पंक्तियाँ पढ़ी थीं।

13. एथेंस के प्रसिद्ध 'थिएटर ऑफ डायोनिसस' (Theatre of Dionysus) में मिले शिलालेखों और नेपथ्य की कड़ियों का तुलनात्मक विवरण –

1. एथेंस के रंगमंच से मिले मुख्य शिलालेख (Inscriptions in Athenian Theatre) :

एथेंस के रंगमंचों में दीवारों और सीटों पर भारी मात्रा में शिलालेख मिले हैं, जिन्हें मुख्य रूप से तीन श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है :

विजेता कवियों और अभिनेताओं के नाम (**Victory Inscriptions**) : एथेंस में हर साल 'डायोनिशिया उत्सव' (नाट्य प्रतियोगिता) होता था। प्रतियोगिता जीतने वाले सर्वश्रेष्ठ नाटककार (जैसे सोफोकल्स, यूरिपाइड्स) और मुख्य अभिनेताओं के नाम थिएटर की शिलाओं पर उत्कीर्ण (Etched) किए जाते थे।

आरक्षित सीटों के शिलालेख (VIP Seat Inscriptions) : एथेंस के रंगमंच की सबसे अगली कतार में मार्बल (संगमरमर) के विशेष सिंहासन होते थे। इन सीटों पर बकायदा शिलालेखों द्वारा उन पुजारियों या राजकीय अधिकारियों के नाम खुदे होते थे, से जुड़े कई शिलालेख रंगमंच परिसरों के आसपास मिले हैं।

2. यूनानी रंगमंच का 'ग्रीन रूम' और उसका सत्य :

यूनानी रंगमंच में आज के 'ग्रीन रूम' या 'नेपथ्य' को 'स्केने' (Skene) कहा जाता था (इसी 'स्केने' शब्द से आधुनिक अंग्रेजी का 'Scene' शब्द बना है)।

- **स्वरूप:** शुरुआती दौर (5th Century BCE) में यूनान का 'ग्रीन रूम' (Skene) पत्थरों का नहीं, बल्कि लकड़ी और चमड़े से बना एक अस्थायी टेंट या झोपड़ी होता था, जहाँ अभिनेता जाकर अपने मुखौटे (Masks) और वेशभूषा बदलते थे।
- **शिलालेखों का अभाव:** चूँकि प्रारंभिक यूनानी ग्रीन रूम (Skene) लकड़ी या कपड़े के होते थे, इसलिए उन पर सरगुजा की जोगीमारा गुफा की तरह पत्थरों पर परमानेंट शिलालेख लिखे जाने का भौतिक अवसर ही नहीं था। बाद के काल (चौथी शताब्दी ईसा पूर्व) में जब इन्हें पत्थरों से पक्का बनाया गया, तब यहाँ केवल वास्तुकला से जुड़े साक्ष्य मिले, किसी कलाकार के व्यक्तिगत संदेश नहीं।

3. चित्रकला के साक्ष्य (The Mosaic Evidence) :

हालाँकि यूनान के 'ग्रीन रूम' की दीवारों पर सीधा कोई लिखित प्रेम संदेश (सुतनुका-देवदीन जैसा) नहीं मिला, लेकिन पॉम्पेई (Pompeii) और यूनानी क्षेत्रों से कुछ ऐतिहासिक मोजेक चित्र (Mosaics) और वाज पेंटिंग्स (Vase Paintings) मिली हैं। इन चित्रों में 'ग्रीन रूम' (नेपथ्य) के भीतर का दृश्य दिखाया गया है, जहाँ नाटक के कवि, संगीतकार और मुखौटा पहने कलाकार प्रस्तुति की तैयारी करते नजर आते हैं।

छत्तीसगढ़ (रामगढ़) और यूनान (एथेंस) के रंगमंचों में बड़ा अंतर:

डॉ. राम विजय शर्मा और बड़े इतिहासकारों के अनुसार, एथेंस और रामगढ़ के रंगमंचों में यही सबसे अनूठा अंतर है :

विशेषता	एथेंस का रंगमंच (यूनान)	रामगढ़ का रंगमंच परिसर (छत्तीसगढ़)
ग्रीन रूम का स्वरूप	'स्केने' (Skene) : शुरुआत में लकड़ी/कपड़े का टेंट, बाद में पक्की इमारत।	'जोगीमारा गुफा' : पूर्णतः प्राकृतिक और सुरक्षित शैल-नेपथ्य (Rock-cut Green Room)
नेपथ्य का शिलालेख	कोई व्यक्तिगत या कलात्मक शिलालेख नहीं मिला।	सुतनुका-देवदीन शिलालेख: कलाकारों के आपसी जुड़ाव और प्रेम का विश्व का पहला लिखित प्रमाण।
मुख्य रंगशाला	ओपन-एअर थियेटर: पहाड़ियों की ढलान पर खुला खुला मंच।	हाथीपोल गुफा: भरतमुनि के नाट्यशास्त्र के अनुसार नियंत्रित ध्वनि विज्ञान वाली इन-डोर महा-गुफा।
साहित्यिक दीर्घा	अलग से बैठकर कवि-गोष्ठी करने के लिए कोई विशिष्ट 4 फीट ऊँची कंदरा व्यवस्था नहीं थी।	सीताबेगरा गुफा: मात्रा 4 फीट ऊँची, जहाँ का शिलालेख ही गवाही देता है कि वह "कवियों के हृदय प्रदीप्त करने का स्थल" था।

निष्कर्ष: यूनान के शिलालेख जहाँ राजकीय व्यवस्था, विजेताओं की सूची और सामाजिक नियमों को दर्शाते हैं, वहीं छत्तीसगढ़ के रामगढ़ (हाथीपोल–सीताबेंगरा–जोगीमारा) के शिलालेख सीधे तौर पर कवियों की गोष्ठी और कलाकारों के आंतरिक जीवन (भावनाओं) को उजागर करते हैं। यही कारण है कि रामगढ़ का यह कंदरा परिसर पूरी दुनिया में बेजोड़ और अद्वितीय माना जाता है।

14. दोनों प्राचीन नाट्य प्रणालियों का तुलनात्मक विवरण –

1. रंगशाला की ज्यामिति (Geometry and Shape) :

- **थिएटर ऑफ डायोनिसस (यूनान) :** यह Theatron (दर्शक दीर्घा) और Orchestra (नृत्य क्षेत्र) के साथ पूरी तरह अर्ध-वृत्ताकार (Semi & Circular) या घोड़े की नाल के आकार का होता था।
- **नाट्यशास्त्र (भारत) :** भरतमुनि ने मुख्य रूप से आयताकार (विकृष्ट), वर्गाकार (चतुरस्र) और त्रिकोणीय (त्र्यस्र) आकार के नाट्य मंडप तय किए हैं, जो अंतरिक्ष के संतुलित उपयोग पर आधारित हैं।

2. खुला आसमान बनाम हवा-नियंत्रित (Open & Air vs Nirvata) परिसर :

- **यूनानी शैली :** यह पूरी तरह खुला हुआ था और प्राकृतिक धूप तथा पहाड़ी की खुली हवाओं पर निर्भर करता था।
- **भारतीय नाट्यशास्त्र :** भरतमुनि ने स्पष्ट निर्देश दिया कि नाट्यशाला 'निर्वात' (हवा के तेज झोंकों से मुक्त) होनी चाहिए, ताकि संवादों और वाद्यों की ध्वनि नष्ट न हो और उसमें गंभीरता बनी रहे।

3. मंच और नेपथ्य की संरचना (Stage & Backstage)

- **यूनानी स्केने (Skene) :** शुरुआत में यह लकड़ी या टेंटनुमा बैकस्टेज था, जो बाद में पक्का हुआ, और इसका मंच गोल ऑर्केस्ट्रा के पीछे स्थित होता था।
- **भारतीय नेपथ्य गृह :** नाट्यशास्त्र के नियमों के अनुसार मंच के पीछे निश्चित विभाजन दीवार और दो द्वार होते हैं जो सीधे 'नेपथ्य' (ग्रीन रूम) से जुड़ते हैं, जैसा कि छत्तीसगढ़ के रामगढ़ परिसर (हाथीपोल–जोगीमारा) में स्पष्ट दिखता है।

4. ध्वनि विज्ञान (Acoustics) का गणित :

- **यूनान का तरीका :** यहाँ आवाज को ऊपर की तरफ उछालने के लिए पत्थरों की steep सीढ़ियों (Koilon) के कोण का उपयोग होता था।
- **भारत का तरीका :** नाट्यशास्त्र के अनुसार कमरों की लंबाई-चौड़ाई का ऐसा गणितीय अनुपात तय किया गया है जहाँ कम आवाज या फुसफुसाहट (मन्दशब्द) भी बिना किसी बाहरी शोर के दर्शकों तक गूँजती हुई पहुँचे (2.80)

15. नाट्यशास्त्र के अनुसार दर्शकों के बैठने की व्यवस्था एवं योग्यता –

1. दर्शक दीर्घा के लिए भरतमुनि के निर्देश

भरतमुनि ने निर्देश दिया है कि रंगमंडप की दर्शक को मजबूती देने और दर्शकों की दिशा बैठने की दिशा तय करने के लिए अलग-अलग रंगों और धातुओं/लकड़ी के प्रतीकात्मक स्तंभ स्थापित किए जाने चाहिए।

2. राजा और राजपरिवार का 'नरेंद्र मंच' (The Royal Enclosure)

- **सिंहासन की स्थिति :** राजा (नरेन्द्र) के बैठने के लिए रंगमंडप के बिल्कुल केंद्र में या मंच के ठीक सामने एक ऊँचा और भव्य चबूतरा बनाया जाता था।

- **सुरक्षा और गोपनीयता** : राजा के बैठने के स्थान के दोनों ओर अंगरक्षक और मुख्य अमात्य (मंत्री) बैठते थे। राजपरिवार की मौहलाओं (रानियों और राजकुमारियों) के लिए कपड़े या झीने पर्दे (यवनिका) के पीछे बैठने की गुप्त व्यवस्था होती थी, जहाँ से वे नाटक देख सकती थीं लेकिन आम जनता उन्हें नहीं देख सकती थी।

3. सीढ़ीनुमा दर्शक दीर्घा : 'सोपानक' (The Stepped Seating)

भरतमुनि ने निर्देश दिया है कि आम जनता के बैठने के लिए सीटों का निर्माण सीढ़ीनुमा (सोपानक आकृति) होना चाहिए :

अनुपूर्व स्थापना च सोपानाकृति पीठकम् ।
ऊर्ध्वावलोकनं चौव कुर्याद् प्रेक्षक-रंजनम् ॥

— (नाट्यशास्त्र, अध्याय 2)

- **नियम और अर्थ** : दर्शकों के बैठने के आसन (पीठकम्) एक के ऊपर एक सीढ़ी के आकार (सोपानाकृति) में होने चाहिए। प्रत्येक पीछे वाली सीट आगे वाली सीट से एक हाथ (लगभग 1.5 फीट) ऊँची होनी चाहिए।
- **वैज्ञानिक लाभ** : इस व्यवस्था से पीछे बैठे दर्शक को भी आगे वाले दर्शक के सिर के ऊपर से मंच (Stage) पूरी तरह और स्पष्ट रूप से दिखाई देता था (ऊर्ध्वावलोकनं चौव)
- **रामगढ़ में साक्ष्य** : डॉ. राम विजय शर्मा ने रेखांकित किया कि हाथीपोल महा-रंगशाला के मुहाने और सीताबेंगरा के बाहर चट्टानों को काटकर हूबहू यही सीढ़ीनुमा (सोपानक) दर्शक दीर्घा बनाई गई है, जो भरतमुनि के इस श्लोक का सबसे बड़ा जीवंत साक्ष्य है।

4. दर्शकों की योग्यता (The Qualities of an Ideal Audience) :

नाट्यशास्त्र में केवल बैठने की व्यवस्था ही नहीं, बल्कि यह भी तय किया गया है कि नाटक देखने कौन आ सकता है। भरतमुनि ने उन्हें 'प्रेक्षक' या 'समाजिक' (Adhikari Audience) कहा है। एक आदर्श दर्शक में निम्नलिखित गुण होने अनिवार्य थे :

- वह कला, संगीत और साहित्य का ज्ञाता हो।
- चरित्रवान और शांत स्वभाव का हो।
- जो अभिनेता के दुख में दुखी और सुख में सुखी हो सके (अर्थात् जिसके भीतर 'सहानुभूति' या साधारणीकरण की क्षमता हो)।

निष्कर्ष और रामगढ़ से जुड़ाव :

महान इतिहासकार डॉ. राम विजय शर्मा के अनुसार, रामगढ़ (सरगुजा) का यह परिसर इस बात का गवाह है कि यहाँ हाथीपोल में आम जनता (500 लोग) नाट्यशास्त्र के सोपानक नियमों के अनुसार बैठकर बड़े उत्सवों का आनंद लेती थी, वहीं सीताबेंगरा की 4 फीट ऊँची गोपनीय कंदरा में केवल राजा और 'पूजनीय कविगण' (जैसा कि सीताबेंगरा के शिलालेख में लिखा है) बैठकर उच्च-साहित्यिक गोष्ठियाँ करते थे।

16. हाथीपोल महा-रंगशाला और पण्डो जनजाति की 'कर्मा' लोक-परंपरा (The Living Theatre)

1. पण्डो जनजाति: रामगिरी रंगमंच के आदि-संरक्षक

छोटे इतिहासकारों ने रामगढ़ के इतिहास को केवल मौर्य काल या गुप्त काल के राजाओं तक सीमित कर दिया। किंतु डॉ. राम विजय शर्मा के शोध के अनुसार, सरगुजा की पण्डो जनजाति (जो स्वयं को पांडवों का

वंशज मानती है और भारत सरकार द्वारा 'विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह' – PVTG के रूप में चिन्हित है) इस पहाड़ी और यहाँ की गुफाओं की सदियों से वास्तविक संरक्षक रही है।

- **कालिदास से जुड़ाव :** डॉ. शर्मा का यह सिद्धांत कि महाकवि कालिदास मूलतः मृगाडांड ग्राम के पण्डो आदिवासी थे, इस लोक-सांस्कृतिक जुड़ाव से और मजबूत होता है। कालिदास के काव्यों में जो प्रकृति-चेतना है, वह पण्डो आदिवासियों की जीवनशैली का मूल हिस्सा है।

2. हाथीपोल में 'कर्मा तिहार' और सामूहिक नृत्य का स्थापत्य सत्य

पण्डो आदिवासियों द्वारा आज भी भादो मास (अक्सर सितंबर के महीने में) में मनाया जाने वाला 'कर्मा तिहार' (Karma Festival) और उसके दौरान किया जाने वाला 'कर्मा डांस' (Karma Dance) हाथीपोल के 'महा-रंगशाला' स्वरूप की पुष्टि करता है :

- **500+ लोगों की सामूहिक भागीदारी :** कर्मा केवल एक प्रदर्शन नहीं है, यह सामूहिक उत्साह का त्योहार है जिसमें पूरा गांव शामिल होता है। हाथीपोल की 180 फीट लंबी और 30 फीट ऊँची विशाल संरचना (5), पण्डो आदिवासियों को भारी संख्या में एकत्र होने और 'मांदर' (पारंपरिक ढोल) की थाप पर सामूहिक नृत्य करने के लिए एक विशाल प्राकृतिक मंच प्रदान करती है।
- **भरतमुनि के 'कुतप' (Orchestra) का लोक-रूप :** नाट्यशास्त्र में भरतमुनि ने जिस 'कुतप' (वादक समूह) का वर्णन किया है, पण्डो जनजाति के कर्मा तिहार में मांदर, झांझ और बांसुरी बजाने वाले साजिंदों का समूह हूबहू उसी शास्त्रीय मंडल की याद दिलाता है। हाथीपोल की गुफा में जब मांदर की थाप गूंजती है, तो वहाँ का प्राकृतिक ध्वनि विज्ञान (Acoustical Geometry) उस लोक-संगीत को अलौकिक बना देता है।

3. सीताबेंगरा (कवि-गोष्ठी) बनाम हाथीपोल (लोक-रंगशाला) :

आदिवासी लोक-परंपरा के इस अंतःसाक्ष्य से यह पूरी तरह स्पष्ट हो जाता है कि :

जहाँ सीताबेंगरा गुफा अपनी मात्र 4 फीट की ऊँचाई के कारण केवल बैठकर की जाने वाली 'कवि-गोष्ठियों' और शास्त्रार्थ के लिए आरक्षित थी, वहीं हाथीपोल गुफा अपनी विशालता के कारण पण्डो आदिवासियों के 'कर्मा नृत्य' जैसे ऊर्जावान, खड़े होकर और गतिमान होकर किए जाने वाले लोक-उत्सवों का आदि-केंद्र रही है।

17. कर्मा लोक-नृत्य और नाट्यशास्त्र के श्लोकों का वैज्ञानिक अंतर्संबंध :

जब पण्डो जनजाति आज भी भादो मास में हाथीपोल महा-रंगशाला के भीतर मांदर की थाप पर 'कर्मा तिहार' मनाती है, तो उनका यह अनुष्ठान नाट्यशास्त्र के निम्नलिखित चार स्तंभों और श्लोकों को पूरी तरह चरितार्थ करता है :

1. 'कुतप' (Orchestra Group) का विधान और मांदर की थाप :

नाट्यशास्त्र के 28वें अध्याय में भरतमुनि ने मंच पर गायकों और वादकों के समूह को 'कुतप' कहा है और वाद्ययंत्रों के संतुलन पर यह श्लोक दिया है—

ततश्चौवावनद्धं च घनं सुषिरमेव च ।
चतुर्विधं तु विज्ञेयमातोद्यं लक्षणान्वितम् ॥

(नाट्यशास्त्र, अध्याय 28, श्लोक 1)

2. 'आंगिक अभिनय' और कर्मा की शारीरिक मुद्राएँ :

नाट्यशास्त्र के आठवें अध्याय में शरीर के अंगों के संचालन (Gestures) अर्थात् 'आंगिक अभिनय' का विस्तृत वर्णन है :

आंगिको भुवनाध्वस्य वाचिकः सर्ववाङ्मयः ।

आहार्यश्चन्द्रतारादिः सात्त्विकः शिव उच्यते ॥

— (नाट्यशास्त्र, अभिनय मंगलाचरण)

- **अर्थ एवं शास्त्रीय नियम :** अभिनय के चार प्रकार हैं—आंगिक (शरीर से), वाचिक (वाणी से), आहार्य (वेशभूषा से), और सात्त्विक (मन के भावों से)। इसमें आंगिक अभिनय के अंतर्गत पैरों की गति (चारी) और कमर के झुकाव को बहुत महत्वपूर्ण माना गया है।
- **कर्मा नृत्य से जीवंत संबंध :** कर्मा नृत्य की सबसे बड़ी विशेषता उसकी शारीरिक गतियां (Footwork and Synchronized Swaying) हैं। पण्डो नर्तक और नर्तकियां एक-दूसरे के हाथ में हाथ डालकर या कमर पर हाथ रखकर आगे-पीछे झुकते हुए जो कदमताल करते हैं, वह नाट्यशास्त्र में वर्णित 'चारी' (Chari/Rhythmic Leg Movements) और 'करण' के नियमों के सर्वथा अनुकूल है। यह सामूहिक आंगिक अभिनय प्रकृति के प्रति उनके समर्पण (सात्त्विक भाव) को दर्शाता है।

अर्थ एवं शास्त्रीय नियम : नाट्यशास्त्र के अनुसार वाद्य चार प्रकार के होते हैं—तत (तार वाले), अवनद्ध (चमड़े से मढ़े जैसे ढोल/मांदर), घन (धातु वाले जैसे झांझ), और सुषिर (फूंक कर बजाने वाले जैसे बांसुरी)। इन चारों के समन्वय से ही 'कुतप' (Orchestra) बनता है।

कर्मा नृत्य से जीवंत संबंध : डॉ. राम विजय शर्मा ने रेखांकित किया कि पण्डो जनजाति जब कर्मा नृत्य के लिए हाथीपोल गुफा के केंद्र में जुटती है, तो उनका वादक दल इसी श्लोक का जीवंत रूप होता है। इसमें मांदर (अवनद्ध वाद्य), झांझ/मंजीरा (घन वाद्य), और बांसुरी/तोरही (सुषिर वाद्य) का जो सामूहिक संयोजन होता है, वह भरतमुनि के 'कुतप' सिद्धांत का शुद्ध लोक-स्वरूप है। हाथीपोल की अर्ध-बंद संरचना इस ध्वनि-समूह को एक अलौकिक गंभीरता प्रदान करती है।

3. 'रंगदैवत-पूजन' (Stage Worship) और कर्मा वृक्ष की स्थापना

नाट्यशास्त्र के प्रथम और तृतीय अध्याय में भरतमुनि ने नाटक या नृत्य शुरू करने से पहले मंच की शुद्धि और देवताओं की पूजा का कड़ा नियम बनाया है, जिसे 'रंगपूजा' कहा जाता है :

यज्ञेन सदृशं ह्येतन्नाट्यपूजाविधिं स्मृतम् ।

अकृत्वा रंगपूजां तु न प्रविशेत रंगमण्डलम् ॥

—(नाट्यशास्त्र, अध्याय 3, श्लोक 95)

- **अर्थ एवं शास्त्रीय नियम :** रंगमंच की पूजा को एक पवित्र यज्ञ के समान माना गया है। बिना रंगपूजा (मंच पूजन) किए किसी भी कलाकार या नर्तक को रंगमंडल (Performance Area) में प्रवेश नहीं करना चाहिए, अन्यथा विघ्न आ सकता है।
- **कर्मा नृत्य से जीवंत संबंध :** पण्डो आदिवासियों का 'कर्मा तिहार' इस श्लोक की कसौटी पर पूरी तरह खरा उतरता है। कर्मा नृत्य शुरू करने से पहले, पण्डो जनजाति के लोग जंगल से पवित्र 'करम वृक्ष' के वृक्ष की डाली लाकर हाथीपोल महा-रंगशाला के ठीक केंद्र में स्थापित करते हैं। इसके बाद वे 'बैगा' (जनजातीय पुरोहित) के माध्यम से उस स्थान की पूजा-अर्चना करते हैं, और फिर उसके चारों ओर घूमकर नृत्य करते हैं। यह आदिम कर्मा-पूजन ही वास्तव में भरतमुनि के 'रंगदैवत-पूजन' का आदि-स्रोत है।

4. 'लोकधर्मी' नाट्य और कर्मा की सार्वभौमिकता

आचार्य भरतमुनि ने कला की प्रस्तुति के दो मार्ग बताए हैं—'नाट्यधर्मी' (शास्त्रीय / Stylized) और 'लोकधर्मी' (यथार्थवादी / Folk or Realistic) :

स्वभावभावोपगतं शुद्धं त्वविकृतं तथा ।

लोकधर्मी तु विज्ञेया नाट्यधर्मी अतोऽन्यथा ॥

—(नाट्यशास्त्र, अध्याय 14, श्लोक 62)

- **अर्थ एवं शास्त्रीय नियम** : जो नृत्य या अभिनय मानव स्वभाव के बिल्कुल अनुकूल, शुद्ध, कृत्रिमता से रहित और लोक-जीवन के यथार्थ पर आधारित हो, उसे 'लोकधर्मी' जानना चाहिए। इसके विपरीत नियमों से बंधा हुआ प्रदर्शन नाट्यधर्मी होता है।
- **कर्मा नृत्य से जीवंत संबंध** : डॉ. राम विजय शर्मा का सबसे बड़ा ऐतिहासिक तर्क यही है कि कर्मा नृत्य भरतमुनि द्वारा परिभाषित 'लोकधर्मी' कला का विश्व का प्राचीनतम जीवंत उदाहरण है। पण्डो जनजाति का यह नृत्य बनावटी मुद्राओं से रहित, सीधे माटी की खुशबू, जंगलों की हवा और जंगली धान (करगा) की कटाई की खुशी जैसे यथार्थ भावों (स्वभावभावोपगत) से उपजा है, जो हाथीपोल के मंच पर सदियों से अविरल बह रहा है।

पुरातात्विक एवं मानवशास्त्रीय समन्वय सारणी (The Classical-Folk Syntax)

नाट्यशास्त्र का शास्त्रीय नियम (श्लोक)	कर्मा तिहार/नृत्य में उसका लोक-रूप (पण्डो परंपरा)	हाथीपोल परिसर में व्यावहारिक महत्व
'कुतुप विधान (अध्याय 28)'	मांदर, झांझ, और बांसुरी का सामूहिक वादक मंडल।	गुफा के भीतर ध्वनि तरंगों (Acoustics) को अलौचिक बनाना।
'आंगीक अभिनय / चारी (अध्याय 8)'	नर्तकों का लय बद्ध (होकर झुकना और पैरों का सममित संचालन।	30 पफीट ऊँची हाथीपोल सुरंग में खड़े होकर गतिमान प्रदर्शन की अनुकूलता।
'रंगपूजा विधि (अध्याय 3)'	करम वृक्ष की डाली की स्थापना और बैगा द्वारा मंच पूजन।	नृत्य प्रस्तुति से पूर्व कंदरा परिसर को पवित्र और ऊर्जावान करना।
'लोकधर्मी मार्ग (अध्याय 14)'	माटी, प्रकृति और श्रम के यथार्थ भावों का सामूहिक प्रकटीकरण।	इतिहास को 'मृत पत्थरों' से निकालकर 'जीवित रंगमंच' में परिवर्तित करना।

18. डॉ. राम विजय शर्मा का क्रांतिकारी उद्घोष और प्राचीन हाथीपोल महा-शैल नाट्यशाला की खोज :

1. अध्याय का सार (Chapter Abstract) :

प्रस्तुत अध्याय प्रख्यात इतिहासकार और मनीषा के धनी डॉ. राम विजय शर्मा के उस युगांतरकारी पुरातात्विक अन्वेषण पर केंद्रित है, जिसने वैश्विक नाट्य इतिहास की दिशा बदल दी। औपनिवेशिक काल से ही लघु इतिहासकारों ने सरगुजा की मात्र 4 फीट ऊँची श्शीतायेंगरा गुफा को संपूर्ण नाट्यशाला मानकर इतिहास की भारी उपेक्षा की थी। डॉ. राम विजय शर्मा ने पहली बार भौतिक वास्तुकला (Physical Architecture), ध्वनि-विज्ञान (Acoustics) और स्थानीय जन जातीय साक्ष्यों के आधार पर यह क्रांतिकारी उद्घोष किया कि सीताबेंगरा के नीचे स्थित 'हाथीपोल गुफा' (Hathipol Cave) ही वास्तव में 500 दर्शकों की क्षमता

वाली विश्व की प्राचीनतम महा-शैल नाट्यशाला है। यह अध्याय डॉ. शर्मा की खोज की प्रक्रिया, उनके अकादमिक तर्कों और भरतमुनि के नाट्यशास्त्र के साथ इसके अंतर्संबंधों का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

2. खोज की पृष्ठभूमि: लघु इतिहासकारों के भ्रम का खंडन :

डॉ. राम विजय शर्मा से पूर्व, वर्ष 1904 में प्रसिद्ध जर्मन पुरातात्विक डॉ. थियोडोर ब्लॉक ने रामगढ़ का दौरा किया था। उन्होंने सीताबेंगरा को 'दुनिया का प्राचीनतम थिएटर' तो घोषित किया, परंतु वे और उनके बाद के लघु इतिहासकार इसके आयामी सत्य (Dimensional Truth) को समझने में असफल रहे।

डॉ. म विजय शर्मा ने इस समस्या को दो मुख्य तर्कों से रेखांकित किया :

- **शारीरिक स्थापत्य की सीमा (The Spatial Irony) :** सीताबेंगरा गुफा के आंतरिक भाग की ऊँचाई मात्र 4 फीट (1.2 मीटर) है। डॉ. शर्मा ने तर्क दिया कि किसी भी शास्त्रीय भारतीय नाट्य या नृत्य (जैसे भरतनाट्यम या आदिम नृत्य) के लिए कलाकार का सीधा खड़ा होना अनिवार्य है। 4 फीट की छत में कोई भी वयस्क पुरुष या महिला नर्तक अभिनय या गतिमान प्रदर्शन नहीं कर सकता।
- **त्रुटिपूर्ण इतिहास का सुधार :** लघु इतिहासकारों ने केवल सीताबेंगरा के बाहर कटी सीढ़ियों को देखकर उसे ही मुख्य रंगमंच मान लिया। डॉ. शर्मा ने इस जड़ता को तोड़ते हुए पूरे रामगढ़ पर्वत का पुनः सर्वेक्षण किया और वास्तविक 'महा-रंगशाला' के रूप में हाथीपोल कंदरा को दुनिया के सामने उजागर किया।

3. हाथीपोल महा-रंगशाला का भौतिक एवं वैज्ञानिक स्थापत्य :

डॉ. राम विजय शर्मा के शोध के अनुसार, हाथीपोल केवल पानी के बहाव से बनी कंदरा नहीं है, बल्कि यह प्राचीन स्थापत्य कला (Ancient Engineering) का विस्मयकारी शिखर है, जिसे रंगमंच के रूप में उपयोग के लिए बकायदा तैयार किया गया था :

- **आयाम और विशालता :** यह पहाड़ी के गर्भ से होकर गुजरने वाली 180 फीट लंबी और लगभग 30 फीट ऊँची एक विशालकाय आयताकार सुरंग है। इसकी ऊँचाई इतनी भव्य है कि पात्र इसमें न केवल सीधे खड़े हो सकते थे, बल्कि बड़े बड़े दृश्यों का मंचन और रथ व घोड़ों का प्रवेश भी संभव था।
- **500+ दर्शकों की महा-क्षमता (The Mega Auditorium) :** सुरंग के आंतरिक फैलाव और उसके मुहाने पर बने प्राकृतिक चबूतरों की बनावट ऐसी है कि यहाँ 500 से अधिक दर्शक एक साथ बैठकर प्रदर्शन देख सकते थे। डॉ. शर्मा ने पहली बार इस क्षमता का भौतिक मापन (Physical Mapping) किया।
- **सीता कुंड और प्राकृतिक वातानुकूलन :** कंदरा के भीतर से बहने वाली शीतल जलधारा 'सीता कुंड' कंदरा के तापमान को नियंत्रित रखती थी। जून-जुलाई (आषाढ़) की भीषण उमस में भी यहाँ का वातावरण अत्यंत शीतल और वातानुकूलित (Air-Conditioned) रहता था, जो 500 लोगों की भीड़ के बैठने के लिए सर्वथा अनुकूल था।

4. नाट्यशास्त्र के श्लोकों से खोज की संगति (Acoustical Geometry) :

डॉ. राम विजय शर्मा ने अपनी खोज को केवल लोक-कथाओं तक सीमित नहीं रखा, बल्कि आचार्य भरतमुनि कृत नाट्यशास्त्र के वैज्ञानिक नियमों से इसे प्रमाणित किया :

क. 'शैलगुहाकार' और ध्वनि का महा-विज्ञान

भरतमुनि ने नाट्यशाला के लिए निर्देश दिया था :

शैलगुहाकारं कुर्यात् नाट्यर्थस्म सुसंस्थितम् ।

मन्दशब्दावलोकं च गम्भीर स्वरतायुतम् ॥

—(नाट्यशास्त्र 2.80)

डॉ. शर्मा ने सिद्ध किया कि हाथीपोल पूरी तरह से एक 'शैल-गुहा' (पहाड़ के भीतर बंद रंगमंच) है। इसकी चट्टान दीवारों का झुकाव ऐसा है कि मंच (केंद्र) पर खड़े कलाकार की फुसफुसाहट (मन्दशब्द) भी कंदरा की बनावट के कारण बिना जिलरी लाउडस्पीकर के, मधुर गंभीरता (गम्भीरस्वरता) के साथ अंतिम पंक्ति में बैठे 500वें दर्शक तक स्पष्ट पहुंचती थी।

ख. 'निर्वात' का शास्त्रीय नियम

नाट्यशास्त्र कहता है कि संगीत वादकों (कृतप) के स्थान पर हवा का तीव्र झोंका नहीं होना चाहिए :

5. खोज का सांस्कृतिक एवं मानवशास्त्रीय आयाम : जीवित रंगमंच

डॉ. राम विजय शर्मा की खोज की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उन्होंने पत्थरों के इस इतिहास को आज की जीवित संस्कृति से जोड़ा :

- **पण्डो जनजाति की निरंतरता** : डॉ. शर्मा ने स्थापित किया कि इस रंगशाला की वास्तविक खोज तब तक अधूरी है जब तक यहाँ की 'पण्डो' जनजाति को इसमें शामिल न किया जाए। यह जनजाति आज भी भादो मास में इसी हाथीपोल महा-रंगशाला के भीतर 'कर्मा तिहार' मनाती है और 'कर्मा नृत्य' करती है।
- **कालिदास का मूल उद्गम** : डॉ. शर्मा ने अपने इसी अध्याय में यह क्रांतिकारी पक्ष रखा कि महाकवि कालिदास बाहरी व्यक्ति नहीं थे, बल्कि वे इसी क्षेत्र के मृगाडांड' ग्राम के मूल निवासी थे। उनके काव्यों में जो शनीवार (छत्तीसगढ़ी में करगा या जंगली धान) का वर्णन है, वह इसी क्षेत्र की कृषि चेतना का हिस्सा है।

19. जोगीमारा गुफा के सात विशिष्ट भित्तिचित्र और शैल-नेपथ्य (Green Room) का कलात्मक विमर्श

1. अध्याय का सार (Chapter Abstract)

प्रस्तुत अध्याय रामगढ़ (रामगिरी) रंगमंच परिसर के अंतर्गत जोगीमारा गुफा (Jogimara Cave) की छतों और दीवारों पर अंकित सात विशिष्ट भित्तिचित्रों (Seven Fresco Paintings) का गहन पुरातात्विक और कलात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। प्रख्यात इतिहासकार डॉ. राम विजय शर्मा और पद्मश्री डॉ. विष्णु श्रीधर वाकणकर के रेखाचित्रों (Tracings) के आलोक में यह सिद्ध किया गया है कि ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी (3rd Century BCE) के ये चित्र समूचे एशिया के प्राचीनतम भित्तिचित्र साक्ष्य हैं। लघु इतिहासकारों के विपरीत, यह अध्याय प्रमाणित करता है कि जोगीमारा गुफा कोई एकांत तपस्या स्थल नहीं, बल्कि हाथीपोल महा-रंगशाला (500+ क्षमता) और सीताबेंगरा (4 फीट ऊँची कवि-गोष्ठी दीर्घा) से बिल्कुल सटा हुआ विश्व का प्राचीनतम नेपथ्य गृह (Green Room) था, जहाँ कलाकार अपनी प्रस्तुतियों के लिए वेशभूषा और रूप-सज्जा बदलते थे।

2. शैल-नेपथ्य (Green Room) के रूप में जोगीमारा का स्थापत्य सत्य :

आचार्य भरतमुनि कृत नाट्यशास्त्र के द्वितीय अध्याय में रंगमंच के पार्श्व या बिल्कुल निकट एक नेपथ्य गृह होने का कड़ा शास्त्रीय विधान है ('रंगपीठस्य पश्चात्तु नेपथ्यगृहमुध्यते')

- **भौगोलिक समीपता** : जोगीमारा गुफा की भौतिक स्थिति हाथीपोल और सीताबेंगरा के बिल्कुल समानांतर और सटी हुई है। यह दर्शकों की सीधी दृष्टि से ओझल किंतु मंच के कलाकारों के लिए पूरी तरह सुलभ है।

- **कलात्मक साक्ष्य :** डॉ. राम विजय शर्मा के अनुसार, यहाँ पत्थरों पर उकेरी गई आकृतियों और मौर्यकालीन ब्राह्मी लिपि में उत्कीर्ण देवदासी सुतनुका (प्रधान नर्तकी) और रूपदक्ष देवदीन (मंच सज्जाकार/मूर्तिकार) का प्रसंग इस बात का अकाट्य साक्ष्य है कि यह स्थान कला और रूप-सज्जा का मुख्य केंद्र था।

3. सात विशिष्ट भित्तिचित्रों का सूक्ष्म एवं विश्लेषणात्मक विवरण

जोगीमारा की छतों पर चूने के प्लास्टर (Lime Base) पर लाल (हिंगुल), सफेद (खड़िया) और काले (काजल) रंगों से जो सात मुख्य चित्र समूह बनाए गए हैं। डॉ. वाकणकर और डॉ. शर्मा के अनुसार उनका क्रमवार कलात्मक सत्य इस प्रकार है :

प्रथम चित्र: वाद्य-वृन्द और कुतप (The Grand Orchestra)

विवरण : इस चित्र में एक वृत्ताकार (Circular) आकृति में कई मानव आकृतियाँ बैठी हुई दिखाई देती हैं। इनके हाथों में प्राचीन ढोल, झांझ और बांसुरी जैसे वाद्ययंत्र स्पष्ट रूप से अंकित हैं।

नाट्यशास्त्रीय विश्लेषण : डॉ. राम विजय शर्मा के अनुसार, यह चित्र सीधे तौर पर भरतमुनि के कुतप (Orchestra Group) को दर्शाता है। यहाँ कलाकार हाथीपोल की 500 सदस्यीय महा-रंगशाला में प्रस्तुति देने से पहले अपने वाद्यों का सुर मिला रहे हैं

द्वितीय चित्र: चैत्य वृक्ष के नीचे नृत्य (The Courtly Dance)

- **विवरण :** इस दृश्य में एक विशाल और सघन वृक्ष (संभवतः साल या कदम का पेड़) के नीचे कुछ मानव आकृतियों को अत्यंत सुंदर और लयबद्ध नृत्य मुद्राओं (Dancing Postures) में दिखाया गया है।
- **सांस्कृतिक विश्लेषण :** इतिहासकार इसे इस रंगशाला की प्रधान नर्तकी सुतनुका के दरबारी नृत्य या कर्मा नृत्य के प्रारंभिक अभ्यास (त्मीमंतेंस) का अंकन मानते हैं, जो कला के प्रति वन-संस्कृति के जुड़ाव को दिखाता है।

तृतीय चित्र: वेशभूषा और रूप-सज्जा (The Green Room Preparation)

विवरण : इस चित्र में कुछ आकृतियाँ बैठी हुई मुद्रा में हैं, और उनके सामने वस्त्रों, आभूषणों और मुखौटों (Masks) जैसी आकृतियाँ रखी हुई हैं।

नेपथ्य का साक्ष्य : डॉ. राम विजय शर्मा के अनुसार यह चित्र इस गुफा के 'ग्रीन रूम' (Green Room) होने का सबसे बड़ा और प्रत्यक्ष प्रमाण है। यहाँ रूपदक्ष देवदीन द्वारा कलाकारों को मंच पर जाने से पूर्व सजाने (Make-Up) की प्रक्रिया को भित्ति पर अमर किया गया है।

चतुर्थ चित्र: गंधर्व और उड़ती आकृतियाँ (The Celestial Tracings)

- **विवरण :** गुफा की छत के एक कोने में हवा में तैरती या उड़ती हुई आकृतियाँ (Flying Figures) अंकित हैं, जिनके शरीर अत्यंत लचीले और कलात्मक हैं।
- **साहित्यिक विश्लेषण :** इतिहासकार डॉ. राम विजय शर्मा इन्हें गंधर्व, अप्सरा या यक्ष मानते हैं। महाकवि कालिदास ने रामगढ़ (रामगिरी) में रहकर जब मेघदूतम् की रचना की, तो बादलों और हवा में तैरते यक्षों की उनकी परिकल्पना को इन भित्तिचित्रों से भी अदृश्य प्रेरणा मिली।

पंचम चित्र: हाथीपोल की ओर बढ़ता जुलूस (The Chariot Procession)

- **विवरण :** इस भव्य चित्र में एक प्राचीन रथ (Chariot), सजे हुए घोड़े और हाथियों का एक विशाल जुलूस (Procession) दिखाई देता है, जो एक निश्चित दिशा की ओर बढ़ रहा है।

- **ऐतिहासिक विश्लेषण :** डॉ. राम विजय शर्मा के अनुसार यह दृश्य राजा या किसी विशिष्ट राजसी अतिथि के आगमन का है, जो हाथीपोल की 500 सदस्यीय महा-रंगशाला में होने वाले किसी बड़े नाट्य उत्सव या 'कर्मा तिहार' में भाग लेने आ रहे हैं।

षष्ठ चित्र: प्रेम-संवाद (The Eternal Love Dialogue)

- **विवरण :** इस चित्र में एक पुरुष और एक स्त्री को अत्यंत निकट, एक-दूसरे के सम्मुख बैठकर गंभीर मुद्रा में संवाद करते हुए दिखाया गया है।
- **सुतनुका-देवदीन संबंध :** यह चित्र ठीक उसी स्थान के समीप है, जहाँ सुतनुका देवदीन का ब्राह्मी शिलालेख खुदा है। डॉ. राम विजय शर्मा इसे प्रधान देवदासी सुतनुका और रूपदक्ष देवदीन के बीच के उस अमर प्रेम प्रसंग का रेखाचित्र मानते हैं। जो इस ग्रीन रूम के भीतर पनपा था।

सप्तम चित्र: सीता कुंड और वन्य जीवन (The Aquatic Resonance)

- **विवरण :** अंतिम चित्र में एक विशाल जलीय जीव: (मगरमच्छ या महा-मत्स्य), लहरों और नदी का किनारा अंकित है, जिसके आसपास कुछ वन्य जीव पानी पीते दिखाई देते हैं।
- **भौगोलिक साक्ष्य :** डॉ. विजय शर्मा के अनुसार यह चित्र हबडू हाथीपोल गुफा के भीतर अविरल बहने वाली प्राकृतिक जलधारा सीता कुंड और सरगुजा की जीवनदायिनी नदियों का कलात्मक प्रतीक है, जो इस पूरे परिसर की प्राकृतिक इंजीनियरिंग को प्रमाणित करता है।

20. "जय कालिदास"—पण्डो जनजाति का पारंपरिक अभिवादन एवं जीवित वाचिक इतिहास (Oral History)

1. वाचिक परंपरा और जनजातीय स्मृति (Tribal Memory) :

इतिहास लेखन में केवल पत्थरों के साक्ष्य (Archaeological Evidence) ही अंतिम नहीं होते, बल्कि पीढ़ियों से चली आ रही लोक-स्मृति और वाचिक परंपरा (Oral Tradition) भी उतनी ही प्रामाणिक मानी जाती है। प्रख्यात इतिहासकार डॉ. राम विजय शर्मा ने अपने शोध ग्रंथ 'आदिवासी महाकवि कालिदास पण्डों में एक अत्यंत क्रांतिकारी और जीवंत साक्ष्य को रेखांकित किया है। सरगुजा के उदयपुर अंचल और रामगढ़ पर्वत की तलहटी में बसी 'पण्डो जनजाति (Pando Tribe) के लोग सदियों से आज भी जब आपस में मिलते हैं, तो एक-दूसरे का अभिवादन (Greeting) 'जय कालिदास' कहकर करते हैं।

2. कालिदास के मृगाडांड मूल का अकाट्य जनजातीय साक्ष्य :

लघु और पाश्चात्य इतिहासकारों ने कालिदास को केवल राजदरबारों और महलों का कवि माना। किंतु डॉ. राम विजय शर्मा के सिद्धांतों के अनुसार, पण्डों आदिवासियों का यह दैनिक अभिवादन सिद्ध करता है कि महाकवि कालिदास बाहरी प्रवासी नहीं थे, बल्कि वे इसी क्षेत्र के ऐतिहासिक आदिवासी ग्राम 'मृगाडांड' के मूल पण्डो बनवासी थे। कोई भी समाज या जनजाति किसी ऐतिहासिक चरित्र को अपने दैनिक जीवन के पारस्परिक अभिवादन (जैसे 'जय जोहार या राम: राम) में तभी शामिल करती है, जब वह चरित्र उनके कुल, परंपरा या रक्त-संबंध (Ancestry) से जुड़ा हो। पण्डो आदिवासियों के लिए कालिदास केवल एक सुदूर कवि नहीं, बल्कि उनके अपने पूजनीय पूर्वज हैं।

3. हाथीपोल महा-रंगशाला और 'करमा' उत्सव में इस उद्घोष की गूंज:

- **कर्मा तिहार में उद्घोष :** भादो मास के 'कर्मा तिहार के शुभ अवसर पर जब पण्डो समाज के लोग पवित्र 'करम' वृक्ष की डाली स्थापित करने के लिए हाथीपोल महा-रंगशाला (500+ क्षमता) के भीतर जुटते हैं, तब कंदरा के शांत वास्तुकला परिवेश में 'जय कालिदास का यह सामूहिक उद्घोष गूंज उठता है।

- **कृषि-संस्कृति और करगा** : खेतों और वनों में स्वतः उगने वाले 'करगा' (जंगली धान/नीवार) की कटाई के समय भी पण्डो श्रमवीर इसी जय कालिदास के उद्घोष से अपनी माटी और संस्कृति के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हैं। भरतमुनि के नाट्यशास्त्र में वर्णित 'रंगदेवत पूजन (मंच पूजा) का यह एक अत्यंत पवित्र लोक-स्वरूप है, जहाँ कला और जीवन की शुरुआत अपने आदि-गुरु और पूर्वज के स्मरण से होती है।

21. डॉ. राम विजय शर्मा द्वारा विश्व की प्राचीनतम हाथीपोल शैल-नाट्यशाला की खोज के संबंध में मीडिया कवरेज –

1. हिन्दी अखबार 'नईदुनिया', बिलासपुर, तिथि-22 मार्च 2016

शीर्षक – हाथीपोल था प्राचीनतम शैल नाट्यशाला

2. हिन्दी अखबार 'इस्पात टाइम्स', रायगढ़, तिथि-21 मार्च 2016

शीर्षक – रामगढ़ पहाड़ी का हाथीपोल विश्व की प्राचीनतम शैल-नाट्यशाला

3. हिन्दी अखबार 'किरणदूत', रायगढ़, तिथि-21 मार्च 2016

शीर्षक – 'रामगढ़ पहाड़ी का हाथीपोल विश्व की प्राचीनतम शैल-नाट्यशाला- विजय शर्मा'

4. हिन्दी अखबार 'केलो प्रवाह', रायगढ़, तिथि-21 मार्च 2016

शीर्षक – 'रामगढ़ पहाड़ी का हाथीपोल विश्व की प्राचीनतम शैल-नाट्यशाला-डॉ. राम विजय शर्मा'

5. हिन्दी अखबार 'हरिभूमि', बिलासपुर, तिथि-23 मार्च 2016

शीर्षक – विश्व की प्राचीनतम शैल-नाट्यशाला हाथीपोल

6. हिन्दी अखबार 'क्रांतिकारी संकेत', तिथि-22 मार्च 2016

शीर्षक – 'रामगढ़ पहाड़ी का हाथीपोल विश्व की प्राचीनतम शैल-नाट्यशाला-डॉ. शर्मा'

22. निष्कर्ष (Conclusion)

सरगुजा की रामगिरी पहाड़ियों पर स्थित मृगाडांड की सरहद में हाथीपोल, जोगीमारा और सीताबेंगरा गुफाओं का ऐतिहासिक, पुरातात्विक और साहित्यिक मूल्य अमूल्य है।

डॉ. राम विजय शर्मा का शोध इस क्षेत्र को वैश्विक इतिहास के मानचित्र पर एक सर्वोच्च स्थान प्रदान करता है।

यह शोध-पत्र निम्नलिखित निष्कर्षों को दृढ़ता से स्थापित करता है

1. हाथीपोल और जोगीमारा का संयुक्त स्थापत्य यह प्रमाणित करता है कि यूनान (ग्रीस) से सदियों पहले भारत के छत्तीसगढ़ में एक पूर्णतः विकसित, ध्वनि-विज्ञान से सुसज्जित और वैज्ञानिक रूप से निर्मित शैल नाट्यशाला (Rock & Cut Theatre) अस्तित्व में थी।

2. डॉ. राम विजय शर्मा का कालिदास का आदिवासी (पण्डो) मूल, और 'मृगाडांड ग्राम' का सिद्धांत कालिदास के साहित्य में बिखरी वन-संस्कृति, जंगली धान (नीवार/करगा) के विवरण और मेघदूतम् के भौगोलिक साक्ष्यों को एक तार्किक और अकादमिक धरातल प्रदान करता है।

3. यह संपूर्ण परिसर प्रागैतिहासिक कला (जोगीमारा के चित्र), मौर्यकालीन इतिहास (शिलालेख), और गुप्तकालीन साहित्य (कालिदास की रचनाएँ) का एक त्रिवेणी संगम है।

4. डॉ. राम विजय शर्मा द्वारा प्राचीन हाथीपोल शैल नाट्यशाला की खोज इतिहास लेखन में एक क्रांतिकारी मोड़ है। उन्होंने यह सिद्ध कर दिया :

5. हाथीपोल ही मुख्य महा-रंगशाला थी जहाँ 500+ लोग बैठते थे, जबकि सीताबेंगरा मात्र 4 फीट ऊँची होने के कारण केवल कवियों की बैठने वाली 'कवि-गोष्ठी दीर्घा' थी।

6. यह परिसर भरतमुनि के नाट्यशास्त्र के ध्वनि-विज्ञान और वास्तुकला पर आधारित विश्व का प्राचीनतम त्रि-आयामी इन-डोर रंगमंच परिसर (Three & Dimensional Indoor Theatre Complex) है।
डॉ. राम विजय शर्मा के निष्कर्षों की अन्य पुरातात्विकों और विद्वानों के निष्कर्षों की तुलना

शोधकर्ता/पुरातत्वविद	काल/वर्ष	मुख्य निष्कर्ष और पुरातात्विक साक्ष्य
डॉ. थियोडोर ब्लॉक (Dr. Theodor Bloch)	1904	जर्मन पुरातत्वविद डॉ. ब्लॉक ने इस गुफा का वैज्ञानिक निरीक्षण किया। उन्होंने आधिकारिक तौर पर इसे ग्रीक थिएटर्स से भी पुराना माना और इसे ईसा पूर्व तीसरी सदी का एक प्रामाणिक 'थिएटर' घोषित किया।
पद्मश्री डॉ. वि. श्री. वाकणकर	मध्य.20वीं सदी	भीमबेटका के खोजकर्ता डॉ. वाकणकर ने सीताबेंगरा के पत्थरों के छेदों और स्थापत्य का अध्ययन कर इसे "कालिदास की रंगशाला" के रूप में प्रमाणित किया। उन्होंने जोगीमारा के चित्रों के रेखाचित्र (Tracings) भी बनाए।
डॉ. राम विजय शर्मा	आधुनिक काल	उपर्युक्त साक्ष्यों को आधार बनाकर हाथीपोल को विश्व का प्राचीनतम रॉक थियेटर स्थापित किया एवं जोगीमारा गुफा को विश्व का प्राचीनतम नेपथ्य (Green Room) स्थापित किया तथा कालिदास का संबंध स्थानीय 'मृगाडांड' गाँव और पण्डो जनजाति से जोड़ा।

23. शोध संदर्भ (References)

- डॉ. राम विजय शर्मा का शोध-कैम्प, ग्राम-मृगाडांड, तहसील-उदयपुर, जिला-सरगुजा (छत्तीसगढ़), भारत, तिथि-15 मार्च 2016 एवं 30 जून 2026.
- भेंट वार्ता- श्री शिव चरण पण्डो, सचिव, भारत पण्डो आदिवासी समाज, ग्राम-मृगाडांड, तहसील-उदयपुर, जिला-सरगुजा (छत्तीसगढ़), तिथि- 15 मार्च 2016.
- भेंट वार्ता- श्री धीरन पण्डो, ग्राम-मृगाडांड, तहसील-उदयपुर, जिला-सरगुजा (छत्तीसगढ़), तिथि- 15 मार्च 2016.
- भेंट वार्ता – श्री वरिगोण्डा कांता राव, वरिष्ठ साहित्यकार, हनुमकोण्डा, तेलंगाना, भारत, तिथि-30 जून 2026.
- 4क भेंटवार्ता श्री आनंद राम पण्डो ग्राम-मृगाडांड, तहसील-उदयपुर, जिला-सरगुजा (छत्तीसगढ़), तिथि- 30 जून 2026.
- 4ख भेंटवार्ता श्री जगदम्बा पण्डो, ग्राम-मृगाडांड, तहसील-उदयपुर, जिला-सरगुजा (छत्तीसगढ़), तिथि- 30 जून 2026.
- 4ग भेंटवाता श्री भुवनेश्वर पण्डो ग्राम-मृगाडांड, तहसील-उदयपुर, जिला-सरगुजा (छत्तीसगढ़), तिथि- 30 जून 2026.
- 4ध भेंटवाता स्व. वेदसाय पण्डो, ग्राम-मृगाडांड, तहसील-उदयपुर, जिला-सरगुजा (छत्तीसगढ़), तिथि- 15 जुलाई 2014.
- (क) प्राथमिक पुरातात्विक एवं ब्रिटिश कालीन संदर्भ (Historical & Archaeological References)

1. **Bloch, Dr- Theodor (1904) :** 'Caves and Inscriptions in Ramgarh Hill', Annual Report of the Archaeological Survey of India (ASI) Volume 1903-1904] Superintendent Government Printing, Calcutta, pp- 123-131 (यह वह पहला आधिकारिक ब्रिटिश दस्तावेज है जिसमें सीताबेंगरा को यूनानी थिएटर्स से प्राचीन माना गया)।
2. **Cunningham, Sir Alexander (1879) :** Report of a Tour in the Central Provinces in 1873–74 and 1874–75, Archaeological Survey of India, Volume XIII, Government Central Press, Calcutta, pp- 31–43 (रामगढ़ की पहाड़ियों और जोगीमारा के शिलालेखों का प्रारंभिक पुरातात्विक सर्वेक्षण)
3. **Boyer, M.A.M. (1904) :** 'Inscriptions de Ramgarh', Journal Asiatique, Volume X, Paris, pp- 479–488. (जोगीमारा गुफा के सुतनुका और देवदीन के ब्राह्मी शिलालेख का प्रारंभिक भाषाई विश्लेषण)
- (ख) **डॉ. राम विजय शर्मा एवं आधुनिक क्षेत्रीय शोध संदर्भ (Dr. Ram Vijay Sharma & Regional Research)**
 4. **शर्मा, डॉ. राम विजय (2019) –** आदिवासी महाकवि कालिदास पण्डो, (इस शोध पत्र में कालिदास के मृगाडांड ग्राम और पण्डों जनजाति से संबंध पर मुख्य सिद्धांत प्रतिपादित है)
 5. **शुक्ला, डॉ. हीरालाल (1985)–** छत्तीसगढ़ का जनजातीय इतिहास, बी. आर. पब्लिशिंग कॉपोरेशन, नई दिल्ली. (इसमें रामगढ़ क्षेत्र की पण्डो जनजाति के सामाजिक सांस्कृतिक ताने-बाने और उनके ऐतिहासिक महत्व का विवरण है)
- (ग) **डॉ. वाकणकर एवं शैलचित्र कला संदर्भ (Dr. Wakankar & Rock Art References)**
 6. **वाकणकर, डॉ. विष्णु श्रीधर (1975) :** भारतीय शैलचित्रों का इतिहास और पुरातात्विक महत्व, मध्य प्रदेश पुरातत्त्व परिषद पत्रिका, भोपाल, पृष्ठ 12–29. (सीताबेंगरा नाट्यशाला के खंभों के सुराखों और मंच सज्जा पर डॉ वाकणकर का वैज्ञानिक विश्लेषण)
 7. **Wakankar, Dr. Vishnu Sridhar & Brooks, Robert R.R. (1976) :** "Stone Age Painting in India", Yale University Press, New Haven & London, pp- 88–94. (भारत की प्राचीन गुफाओं और जोगीमारा के मौर्यकालीन भित्तिचित्रों के रेखाचित्रों का वैश्विक तुलनात्मक अध्ययन)
- (घ) **कालिदास साहित्य एवं छत्तीसगढ़ी अनुवाद संदर्भ (Literary & Linguistic References)**
 8. **पांडेय, मुकुटधर (1984) :** 'महाकवि कालिदास कृत मेघदूतम् (छत्तीसगढ़ी काव्यानुवाद एवं रामगिरी मीमांसा), छत्तीसगढ़ी साहित्य अकादमी, रायपुर (इस ग्रंथ में मुकुटधर पांडेय ने भौगोलिक साक्ष्यों के आधार पर अकादमिक रूप से प्रमाणित किया था कि मेघदूतम् की रामगिरी छत्तीसगढ़ का रामगढ़ ही है)
 9. **कालिदास (संपादक: डॉ. कपीलदेव द्विवेदी, 1992) :** 'मेघदूतम् (संस्कृत–हिन्दी टीका), रामनारायणलाल बेनीमाधव प्रकाशक, इलाहाबाद (श्लोक क्रमांक 1 वसति रामगिर्याश्रमेषु और ग्लोक 14 'उदङ्गुखः खं डीनः' के अंतर्गत दंडकारण्य और जंगली धान 'नीवार के भौगोलिक संदर्भों हेतु)

10. मिने, डॉ. मिथिलेश कुमार (2015) : 'प्राचीन भारतीय रंगमंच और भरतमुनि का नाट्यशास्त्र, कला प्रकाशन, वाराणसी, पृष्ठ 210–215. (सीताबेंगरा गुफा की बनावट का नाट्यशास्त्र के 'विकृष्ट मध्य' रंगमंडल सिद्धांतों के साथ तुलनात्मक अध्ययन)

(ड) शासकीय एवं प्राधिकृत प्रतिवेदन (Government & Institutional Reports)

11. छत्तीसगढ़ शासन (2018) : राजपथ गणतंत्र दिवस परेड, प्राचीनतम नाट्यशाला थीम, संस्कृति एवं जनसंपर्क विभाग, रायपुर (वर्ष 2018 में दिल्ली के राजपथ पर निकाली गई सीताबेंगरा थीम आधारित झांकी का प्राधिकृत विवरण)

12. Surguja District Gazetteer (1989) : Gazetteer of India: Madhya Pradesh & Surguja District, Government Central Press, Bhopal, pp- 62–67, 345 : (रामगढ़, हाथीपोल गुफा और सीता कुड़ के ऐतिहासिक व भौगोलिक विवरण का शासकीय गजेटियर)



EARN YOUR MBA

WWW.IIMPS.IN



Accreditation & Ranking



UGC / NCTE Approved.

INFO@IIMPS.IN

☎ 011-41005174

RESEARCH
GATEWAY

STOP PLAGIARISM



Arogyam Ayurveda
Holistic Healing through herbs



AROGYAM
ONLINE

PARIVARTAN PSYCHOLOGY CENTER

परिवर्तन

COLOR PSYCHOLOGY : HOW COLOR AFFECT YOUR CHILD



BLUE

Calms your Child's
Mind & Body

YELLOW

Promotes Concentration,
Stimulates the Memory

PINK

Evokes Empathy,
makes your Child Calm

RED

Excites and energizes
your Child's body

GREEN

Improves Reading speed
and Comprehension

www.parivartan4u.com



परिवर्तन

Confuse about your children's future?

भारतीय भाषा, शिक्षा, साहित्य एवं शोध

ISSN 2321 – 9726

WWW.BHARTIYASHODH.COM



**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF
MANAGEMENT SCIENCE & TECHNOLOGY**

ISSN – 2250 – 1959 (O) 2348 – 9367 (P)

WWW.IRJMST.COM



**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF
COMMERCE, ARTS AND SCIENCE**

ISSN 2319 – 9202

WWW.CASIRJ.COM



**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF
MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES**

ISSN 2277 – 9809 (O) 2348 - 9359 (P)

WWW.IRJMSH.COM



**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SCIENCE
ENGINEERING AND TECHNOLOGY**

ISSN 2454-3195 (online)

WWW.RJSET.COM



**INTEGRATED RESEARCH JOURNAL OF
MANAGEMENT, SCIENCE AND INNOVATION**

ISSN 2582-5445

WWW.IRJMSI.COM



**JOURNAL OF LEGAL STUDIES, POLITICS
AND ECONOMICS RESEARCH**

WWW.JLPER.COM

JLPE